कक्षा-दसवीं हिंदी ‘ब’

कबीर की साखियाँ

पाठ्यपुस्तक- स्पर्श (भाग-2)

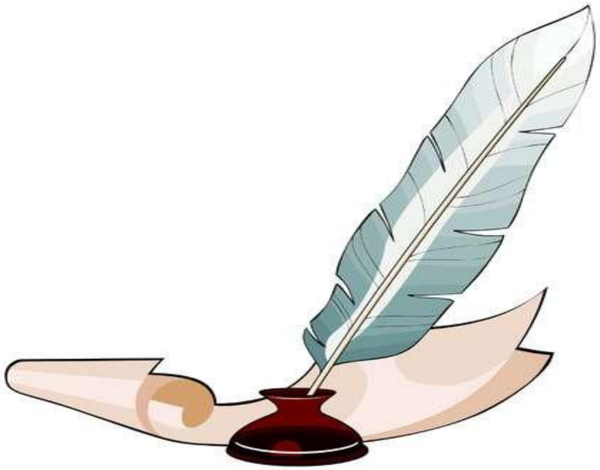

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. संदीप सिंघल (प्रूडेंस स्कूल, अशोक विहार)

कवि परिचय: कबीर

जीवन परिचय: कबीरदास का नाम संत कवियों में सर्वोपरि है। इनके जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं। इनका जन्म (1398 ई.) में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ माना जाता है। इनके विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। इन्होंने देशाटन और सत्संग से ज्ञान प्राप्त किया। किताबी ज्ञान के स्थान पर आँखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी- "में कहता हों आँखन देखी, तू कहता कागद की लेखी।" इनका देहावसान 1518 ई में मगहर में हुआ।

रचनाएँ: कबीरदास जी के पदों का संग्रह 'बीजक' नामक ग्रंथ में है, जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी आदि संकलित हैं।

साहित्यिक परिचय: कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि संत-कवि हैं। इन पर नाथों, सिद्धों और सूफी-संतों की बातों का प्रभाव है। वे कर्म-कांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे। कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे।

आचार्य **'रामचंद्र शुक्ल'** जी ने कबीर जी को **'वाणी का डिक्टेटर'** भी कहा है।

कबीर की साखियाँ (पाठ-प्रवेश)

'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का ही (तद्भव) बदला हुआ रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है- प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात् जो ज्ञान सबको स्पष्ट दिखाई दे। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान किया जाता है।
संत (सज्जन) संप्रदाय (समाज) में अनुभव ज्ञान (व्यवहारिक ज्ञान) का ही महत्त्व है- शास्त्रीय ज्ञान अर्थात् वेद-पुराण इत्यादि का नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र बहुत अधिक फैला हुआ था, अर्थात् कबीर जगह-जगह घूम कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे।

इसलिए उनके द्वारा रचित साखियों में अवधि, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओँ के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पंचमेल-खिंचड़ी' अर्थात् अनेक भाषाओँ का मिश्रण कहा जाता है। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी (साधुओं की भाषा) भी कहा जाता है।

'साखी' वस्तुतः (एक तरह का) दोहा छंद ही है। प्रस्तुत पाठ की साखियाँ प्रमाण हैं कि सत्य को सामने रख कर ही गुरु, शिष्य को जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा देता है। यह शिक्षा जितनी अधिक प्रभावशाली होगी, उतनी ही अधिक याद रहेगी। इन साखियों में कबीर ईश्वर प्रेम के महत्त्व को प्रस्तुत कर रहे हैं।

कबीर की साखियाँ (एक परिचय)

पहली साखी में कबीर मीठी भाषा का प्रयोग करने की सलाह देते हैं ताकि दूसरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त हो।

दूसरी साखी में कबीर ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूँढने के स्थान पर अपने मन में ढूँढने की सलाह देते हैं।

तीसरी साखी में कबीर ने अहंकार और ईश्वर को एक दूसरे से विपरीत (उल्टा) बताया है। अर्थात् अहंकार भक्ति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।

चौथी साखी में कबीर कहते हैं कि प्रभु को पाने की आशा उनको संसार के लोगों से अलग करती है और वह रातभर जाग कर अज्ञानी संसार की चिंता व ईश्वर का भजन करते हैं

पाँचवीं साखी में कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता, अगर रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

छठी साखी में कबीर निंदा करने वालों को भी हमारे स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए मुख्य मानते हैं और उसके प्रति भी आदर प्रकट करते हैं।

सातवीं साखी में कबीर ईश्वर प्रेम की वास्तविकता को जानने वाले व्यक्ति को ही पंडित अर्थात् सही अर्थों में विद्वान बताते हैं।

अंतिम साखी में कबीर कहते हैं कि यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह-माया रुपी घर का त्याग करना पड़ेगा तभी हमें ईश्वर की प्राप्ति होगी।

कबीर की साखियाँ

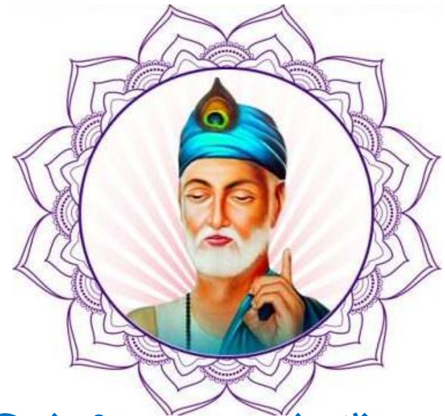

1. ऐसी बाँणी बोलिए मन का आपा खोई।
अपना तन सीतल करै औरन कैं सुख होई।।

भावार्थ- साखी की इन पंक्तियों में कबीर ने वाणी को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया है। कबीर जी ने अपने दोहे में कहा है कि हमें ऐसी मधुर वाणी बोलनी चाहिए, जिससे हमें शीतलता का अनुभव हो और साथ ही सुनने वालों का मन भी प्रसन्न हो उठे। मीठा बोलने से प्रेम की भावना का संचार होता है। जबकि कटु वचनों से हम एक-दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इसलिए हमेशा मीठा और उचित ही बोलना चाहिए, जो दूसरों को तो प्रसन्न करता ही है और स्वयं को भी सुख की अनुभूति कराता है।

शब्दार्थ- बाँणी- बोली, **आपा**- अहम् (अहंकार) **खोइ**- त्याग करना, **सीतल**- शीतल (ठंडा, अच्छा) **औरन**- दूसरों को।

2. कस्तूरी कुण्डली बसै मृग ढूँढ़ै बन माहि।
ऐसे घटी घटी राम हैं दुनियां देखै नाँहि।।

भावार्थ- जिस प्रकार हिरण की नाभि में कस्तूरी रहती है, परन्तु हिरण इस बात से अनजान उसकी खुशबू के कारण उसे पूरे जंगल में इधर-उधर ढूंढ़ता रहता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए हम उन्हें मंदिर-मस्जिद, पूजा-पाठ में ढूंढ़ते हैं। जबकि ईश्वर तो स्वयं कण-कण में बसे हुए हैं, उन्हें कहीं ढूंढ़ने की ज़रूरत नहीं। बस ज़रूरत है, तो स्वयं को पहचानने की।

शब्दार्थ- कुंडली- नाभि, मृग- हिरण, **घटि-घटि-** कण-कण में, **कस्तूरी-** एक तरह का पदार्थ होता है, जो नर-हिरण की नाभि में पाया जाता है। इसमें एक प्रकार की विशेष खुशबू होती है। इसे इंग्लिश में **'Deer musk'** बोलते हैं।

कबीर की साखियाँ

3. जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटी गया जब दीपक देख्या माँहि।।

भावार्थ- साखी की इन पंक्तियों में कबीर जी कह रहे हैं कि जब तक मानव में अहंकार (मैं) रहता है, तब तक वह ईश्वर की भक्ति में लीन नहीं हो सकता और एक बार जो मनुष्य ईश्वर-भक्ति में पूर्ण रुप से लीन हो जाता है, उस मनुष्य के अंदर कोई अहंकार शेष नहीं रहता। वह खुद को नगण्य (तुच्छ) समझता है। जिस प्रकार दीपक के जलते ही पूरा अंधकार मिट जाता है और चारों तरफ प्रकाश फ़ैल जाता है, ठीक उसी प्रकार, भक्ति के मार्ग पर चलने से ही मनुष्य के अंदर व्याप्त अहंकार मिट जाता है।

शब्दार्थ- मैं- अहम् (अहंकार) **हरि-** ईश्वर, **अंधियारा-** अज्ञान रुपी अँधेरा, **माँहि-** अपने ही अंदर।

4. सुखिया सब संसार है खाए अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै।।

भावार्थ- साखी की इन पंक्तियों में कबीर ने समाज के ऊपर व्यंग्य किया है। वह कहते हैं कि सारा संसार किसी झांसे में जी रहा है। लोग खाते हैं और सोते हैं, उन्हें किसी बात की चिंता नहीं है। वह सिर्फ़ खाने एवं सोने से ही ख़ुश हो जाते हैं। जबकि सच्ची ख़ुशी तो तब प्राप्त होती है, जब आप प्रभु की आराधना में लीन हो जाते हो। परन्तु भक्ति का मार्ग इतना आसान नहीं है, इसी वजह से संत कबीर को जागना एवं रोना पड़ता है।

शब्दार्थ- सुखिया- सुखी, **अरु-** अज्ञान रूपी अंधकार, **सोवै-** सोये हुए, **दुखिया-** दुःखी, रोवै- रोने की अवस्था में होना।

कबीर की साखियाँ

5. बिरह भुवंगम तन बसै मंत्र न लागै कोई।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होई।।

भावार्थ- कबीर जी कहते हैं, जिस प्रकार अपने प्रेमी से बिछड़े हुए व्यक्ति की पीड़ा किसी मंत्र या दवा से ठीक नहीं हो सकती, ठीक उसी प्रकार अपने प्रभु से बिछडा हुआ कोई भक्त जी नहीं सकता। उसके लिए ईश्वर से दूरी किसी साँप के डसने के समान है, उसमें प्रभु-भक्ति के अलावा कुछ शेष बचता ही नहीं। अपने प्रभु से अलग होकर अगर वो जीवित रह भी जाता है, तो अपने प्रभु की याद में वो पागल हो जाता है।

शब्दार्थ- बिरह- बिछड़ने का गम, **भुवंगम-** भुजंग (साँप) **बौरा-** पागल

6. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

भावार्थ- साखी की इन पंक्तियों में संत कबीर दास जी के अनुसार जो व्यक्ति हमारी निंदा करते हैं, उनसे कभी दूर नहीं भागना चाहिए, बल्कि हमें हमेशा उनके समीप रहना चाहिए। जैसे हम किसी गाय को अपने आँगन में खूँटे से बांधकर रखते हैं, ठीक उसी प्रकार ही हमें निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने पास रखने का कोई प्रबंध कर लेना चाहिए। जिससे हम प्रतिदिन उनसे अपनी बुराईयों के बारे में जान सकें और अपनी गलतियाँ दोबारा दोहराने से बच सकें। इस प्रकार हम बिना साबुन और पानी के ही स्वयं को निर्मल बना सकते हैं।

शब्दार्थ- निंदक- निंदा करने वाला, **नेड़ा-** निकट, **आँगणि-** आँगन, **साबण-** साबुन, **निरमल-** साफ़, मल रहित, **सुभाइ-** स्वभाव

कबीर की साखियाँ

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई।
एकै अषिर पीव का पढ़ै सु पंडित होई।।

भावार्थ- इन पंक्तियों में कबीर के अनुसार सिर्फ़ मोटी-मोटी किताबों को पढ़कर किताबी ज्ञान प्राप्त कर लेने से भी कोई पंडित (विद्वान) नहीं बन सकता। जबकि ईश्वर-भक्ति का एक अक्षर पढ़ कर भी लोग पंडित बन जाते हैं। अर्थात् किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी होना आवश्यक है, नहीं तो कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता।

शब्दार्थ- पोथी- पुस्तक ,**मुवा-** मरना ,**भया-** बनना ,**अषिर-** अक्षर ,**पीव-** प्रिय

8. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

भावार्थ- साखी की इन पंक्तियों में संत कबीर दास जी के अनुसार सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए, हमें अपनी मोह-माया का त्याग करना होगा। तभी हम सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। कबीर के अनुसार, उन्होंने खुद ही अपने मोह-माया रूपी घर को ज्ञान रूपी मशाल से जलाया है। अगर कोई उनके साथ भक्ति की राह पर चलना चाहता है, तो कबीर अपनी इस मशाल से उसका घर भी रौशन करेंगे अर्थात अपने ज्ञान से उसे मोह-माया के बंधन से मुक्त करेंगे।

शब्दार्थ- घर- (मोह-माया का प्रतीक) **जाल्या-** जलाया, **आपणाँ-** अपना, **मुराड़ा-** जलती हुई लकड़ी (ज्ञान का प्रतीक) **जालौं-** जलाऊं, **तास का-** उसका

कबीर की साखियों की सीख (पुनरावृत्ति)

1. हमें जीवन में सदैव मीठी वाणी बोलनी चाहिए ताकि सबको सुख मिले।

2. ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूँढने के स्थान पर अपने मन में ढूँढना चाहिए।

3. ईश्वर को पाने के लिए सबसे पहले अहंकार का त्याग आवश्यक है।

4. मात्र खाना और सोना सच्चा सुख नहीं है, हमें ईश्वर की आराधना में सुख खोजना चाहिए।

5. ईश्वर का वियोग असहनीय है, अगर सहना भी पड़े तो स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

6. निंदा करने वाले के प्रति भी आदर भाव रखें, क्योंकि उसके माध्यम से हमारा स्वभाव निर्मल होता है।

7. ईश्वर प्रेम की वास्तविकता को जानने वाला व्यक्ति ही सही अर्थों में विद्वान होता है।

8. यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह-माया रुपी घर का त्याग करना पड़ेगा।

कबीर की साखियाँ (लेखन कार्य)

हमारा आज का कार्य

कबीर द्वारा बताए गए ‘मीठी वाणी’ के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए वाणी के सही और सार्थक प्रयोग पर बल देते हुए अपने मित्र को एक संदेश लिखिए।

धन्यवाद

प्रस्तुतकर्ता- डॉ. संदीप सिंघल (प्रूडेंस स्कूल, अशोक विहार)